International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 2; Issue 6; November 2016; Page No. 49-51

पर्यावरण चेतनाः वैश्विक शंखनाद (गुरु जाम्भोजी के संदर्भ में)

विनोद कुमार

अध्यक्ष, हिन्दी–विभाग, भाग सिंह खालसा कॉलेज फॉर विमिन, काला–टिब्बा, अबोहर, पंजाब, भारत।

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति में पर्यावरण को दैवतुल्य स्थान प्राप्त है। आदिम सभ्यता से ही प्रकृति के नाना रूपों यथा– सूर्य, धरती, नदी, पर्वत, पीपल, खेजड़ी, गाय, बैल आदि की पूजा का विधान भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग रहा है। पर्यावरण मनुष्य की जीवनदायिनी सत्ता है। पर्यावरण का अर्थ है– जीवन को संरक्षण प्रदान करने वाला कवच अर्थात् हमारे चारों ओर का आवरण। पर्यावरण संरक्षण से अभिप्राय है कि हम अपने चारों ओर के आवरण को संरक्षित करें तथा उसे अनुकूल बनाएं। पर्यावरण और प्राणी एक–दूसरे पर आश्रित है। यही कारण है कि भारतीय चिंतन परंपरा में पर्यावरण संरक्षण की अवधारणा उतनी ही प्राचीन है, जितना यहाँ मानव जाति का ज्ञात इतिहास है। मानव सभ्यता द्वारा प्रकृति के आश्रय में जीवन यापन करने के प्रमाण इतिहास में सुरक्षित है। आदिवासियों के संदर्भ में जल, जंगल, जमीन का महत्व आज भी नजर अन्दाज नहीं किया जा सकता। सृष्टि में प्राणी–मात्र का जीवन प्रकृति के बिना असम्भव प्रायः है।

भौतिक विकास के दौर में नगरीकरण की ओर बढ़ते कदमों ने मनुष्य को प्रकृति से दूर कर दिया। भले ही मनुष्य सभ्य कहला कर जंगल और गुफाओं को छोड़कर पक्के भवनों में रहने लग गया है, किन्तु इस तरह सभ्य होने का परिणाम समस्त सृष्टि के समक्ष उभर चुके है। वैज्ञानिक युग की विकासशील प्रक्रिया में प्रकृति का जो दोहन हुआ है, वह मनुष्य की तरक्की के दावे का प्रतिरूप है। अवैध खनन, बहुमंजली इमारतों का निमार्ण, राजमार्गों की संरचना, नगरीकरण के चलते वृक्षों की अन्धाधुन्ध कटाई ने वन क्षेत्र की प्रतिशत मात्रा के आंकड़ों में भारी गिरावट दर्ज करवाई है।

वर्तमान युग में पर्यावरण प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, जीव–जैविक जगत् से भिन्न–भिन्न वनस्पतियों एवं प्राणियों की प्रजातियों का विलुप्त होना जैसी समस्याएँ दिन–प्रतिदिन भयानक होती जा रही है। प्राकृतिक असन्तुलन के कारण बढ़ते तापमान से हिमखण्ड पिघल रहे है। ग्लोबल वार्मिंग की भयावह स्थिति से पूरा विश्व आंतकित है। प्राकृतिक दोहन करके मनुष्य अपने ही अंग को काट खाने की स्थिति में खड़ा नजर आता है।

भारतीय चिन्तन परम्परा में वसुधैव कुटुम्बकम् की अवधारणा का सन्निवेश उसकी समष्टिपरक भावना का परिचायक है। समस्त संसार का कल्याण इस चिन्तनधारा का मूलाधार है। संत–साहित्य समूची मानवता के कल्याण की भावना से ओत–प्रोत है। भारतभूमि ऋषि–मुनियों, सन्तों–भक्तों की तपोभूमि रही है। सन्तों का चिन्तन कभी कूपमंडूक नहीं रहा। कहा भी गया है–

'संत जब आत जगत् में माँगत सबकी खैर'

संतो की परम्परा में गुरु जम्भेश्वर का स्थान सर्वोपरि हैं। युगपुरुष गुरु जाम्भोजी का अवतरण सम्वत् 1508 में राजस्थान के नागौर परगने के पीपासर नामक कस्बे में हुआ।[1] गुरु जाम्भोजी गुरु जाम्भोजी संत होने के साथ–साथ दूरद्रष्टा, वैज्ञानिक व पर्यावरणविद् भी थे। गुरु जाम्भोजी ने भावी समस्याओं को 565 वर्ष पूर्व चिह्नित करते हुए दूरदृष्टि का परिचय दिया। आधुनिक युग में सारे के विश्व समक्ष जो समस्याएं सुरसा की भांति मुँह बाये खड़ी है, उनका निदान गुरु जाम्भोजी ने बहुत पहले ही वैज्ञानिकता से मंडित '29 नियमों' की संरचनावली के तहत सुझा दिया था। वृक्षों द्वारा प्रदत्त ऑक्सीजन जीवन का आधार है, इसी लिए गुरु जाम्भोजी ने हरे वृक्ष काटने पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया था। सबद संख्या 19–20 वृक्षों की सुरक्षा का संदेश निहित है–

जीव दया पालणी, रूंख लीला नहीं घावै' [2]

वृक्षों के अभाव में अनावृष्टि के कारण मरुभूमि में भंयकर अकाल का सामना करना पड़ता है। प्रदूषित वायु में श्वास लेना भी मुश्किल हो जाता है। ऑक्सीजन–कार्बनडाइआक्साइड का संतुलन बिगड़ जाता इस भयावह स्थिति को पहचान कर मानव को सचेत कर दिया।

गुरु जाम्भोजी का वृक्षों के प्रति आत्मीय प्रेम था। उनके द्वारा प्रणीत बिश्नोई सम्प्रदाय के अनुयायियों द्वारा वृक्ष हितार्थ 'खेजड़ली बलिदान' की घटना समूचे विश्व के लिए प्रेरणास्रोत है। *'सिर सांटै रुंख रहै तो भी सस्तौ जाण'* जैसी उक्ति किसी आप्तवाक्य से कम नहीं है। एक वृक्ष को बचाने के लिए एक सिर भी कटवाना पड़े तो मंहगा सौदा नहीं है। किसी भी हालात में वृक्षों को काटना गुरु जाम्भोजी को स्वीकार्य नहीं था–

'सोम अमावस आदितवारी, कांय काटी बनरायों [3]

सोम (चन्द्रमा), अमावस (अमावस्या), आदित (सूर्य) से रहित कोई समय नहीं होता। दिन में सूर्य, रात्रि में चन्द्रमा, अन्धेरी रात्रि में अमावस्या रहेगी। इसलिए हरे वृक्ष काटना सदा ही वर्जित है।

गुरु जाम्भोजी का दर्शन पर्यावरण के साथ बहुत गहराई से जुड़ा है। उन्होंने अपना अस्तित्व भी वहां बताया है जहां वृक्षों की बहुतायत है–

'हरी कंकहेड़ी मंडप मैड़ी, जहां हमारा वासा' [4]

प्रकृति के बीच अध्यात्म की प्रतिष्ठा करके गुरु जाम्भोजी ने प्रकृति को ईश्वरमय बना दिया। वनस्पति के महत्व को रेखांकित करते हुए सामान्य लोगों को पर्यावरण–संरक्षण के प्रति सचेत किया। उन्होंने सम्पूर्ण धरती में ध्यानासन बताते हुए वनस्पति–वृक्षादि के रूप में अरूप तत्व का निवास होने की संकल्पना देते हुए वैश्विक सरोकार का परिचय दिया–

'मौरे धरती ध्यान वनस्पति वासों, ओजूं मण्डल छायों' [5]

ईश्वर की सर्वव्यापकता को प्रकृति में समाहित करते हुए गुरु जाम्भोजी ने उद्घोषणा की है–

'नदिये नीरू सागर हीरू, पवणां रूप फिरै परमेश्वर' [6]

गुरु जाम्भोजी ने स्वयं प्राकृतिक परिवेश के साथ तादात्म्य स्थापित करते हुए जीवन व्यतीत किया। मरूभूमि में प्रकृति समय–समय पर अपना रंग दिखाती है– कभी शीत हवाएं, कभी भयंकर लू, तो कभी अनावृष्टि, कभी अतिवृष्टि। इस प्रकार के वातावरण में गुरु जाम्भोजी ने हरि कंकहेड़ी की शरण में अपना जीवन व्यतीत किया।

'रात पड़न्ता पाळा भी जाग्या, दिवस तपंता सूरूं
उन्हां ठंडा पवना भी जाग्या, घन बरषंता नीरूं' [7]

गुरु जाम्भोजी के प्रकृतिस्थ जीवन का उल्लेख करते हुए जाम्भाणी–साहित्य परम्परा के मूर्धन्य कविराज वील्होजी ने ''कथा अवतार पात'' में लिखा है–

'धन्य जंगल्य धन्य संभरा, धन्य ए बाल गुवाल।
जंही संग्य रामत्य रम्यसौ, लालण लील भुंवाल।
हरी कंकेड़ी हरया वन, जित प्रभु कियो प्रवेश।
रूंखां वल्य रल्य आवणी, जित रमंतो बाल वेश।
परचौ पसु पंखेरवां, जां जीवां उतिम जाति।
पवित्र कीया जोत की, परची गुपत जमाति।' [8]

प्रकृति प्रेमी होने के नाते गुरु जाम्भोजी ने समस्त प्राकृतिक संरचना में जीव–जन्तुओं को भी मानव–समाज का अभिन्न अंग माना है। निर्दोष जीवों पर अत्याचार व उनकी हत्या का प्रखर विरोध जाम्भोजी की वाणी का मूलाधार है। धर्म के नाम पर निरीह प्राणियों की बलि देना ईश्वर प्राप्ति का साधन नहीं है। गुरु जाम्भोजी ने सभी धर्मों से यह आह्वान किया है कि किस महापुरुष, पैगम्बर ने यह उपदेश दिया है या कौन से धर्म का विधायक जीवों के गले पर छुरी चलाने को ईश्वरोन्मुखी कार्य घोषित करता है। यह संसारिक मनुष्य ही मनमुखी होकर मांस भक्षण हेतु जीवों की हत्या करता है और अपना दोष छिपाने के लिए धर्म का आश्रय लेता है।

'सुण रे काजी सुण रे मुल्ला, सुण रे बकर कसाई।
किणरी थरपी छाली रोसो, किणरी गाडर गाई।
सूल चुभीजै करक दुहैली, तो है है जायों जीव न घाई।
थे तुरकी छुरकी भिस्ती दावों, खायबा खाज अखाजूं।
चर फिर आवै सहज दुहावै, तिसका खीर हलाली।
जिसके गले करद क्यूं सारो, थे पढ़ सुण रहिया खाली।' [9]

मनुष्य ज्ञान से आपूरित ग्रंथों का मनन करने के पश्चात् भी भीतर से खाली ही रहा है। निरीह प्राणियों की हत्या करके वह स्वर्ग का अधिकारी बनना चाहता है, जो असंभवप्रायः है। यदि ऐसा करना इष्ट होता तो श्रीकृष्ण कभी भी गऊ ना चराते–

'कांहे काजै गऊ विणासै, तो करीम गऊ क्युं चारी' [10]

प्रकृति के समस्त जीव–जन्तु मनुष्य के सहचरी है। गुरु जाम्भोजी ने तो मानवेतर जीवों को भाई से भी बढ़कर प्रिय माना है। खेतों में हल चलाने वाले बैल को भाई से अधिक प्रिय बताया है–

'भाई नाऊं बलद पियारो, ताकै करद क्यूं सारों' [11]

भारत गाँवों का देश है और गाँवों में आजीविका मुख्य आधार पशुपालन रहा है। गुरु जाम्भोजी की विहार भूमि राजस्थान में भेड़–बकरियो का पालन मुख्यतः होता रहा है। मादा भेड़–बकरियों का समूह होता है परन्तु नर भेड़–बकरा समूह में नहीं रह पाते, जिस कारण लोग उन्हें कसाइयों के हाथ सौंप देते है। इसी तरह बछड़े को खेतों में जोतने से पहले नपुंसक किया जाता है। नपुंसक करने की क्रिया अत्यंत पीड़ादायक होती है। गुरु जाम्भोजी ने इन दोनों स्थितियों से दूर रहने का उपदेश देते हुए कहा है–

'अमर रखावै थाट, बैल बधिया न करावै' [12]

जीवों के प्रति अदम्य प्रेम का अदांजा इस तरह लगाया जा सकता है कि गुरु जाम्भोजी ने जीव हत्या तो दूर, चरती हुई गाय को भगाना व नवजात बछड़े को गाय से अलग करना भी दोषान्तर्गत माना है–

'कै तै सूवा गाय का बच्छ बिछोड़या, कै तैं चरती पिवती गऊ बिडारी' [13]

पृथ्वी ग्रह पर प्राकृतिक संतुलन मानव–जीवन के अनिवार्य तत्त्व है। पर्यावरण संरक्षण प्रत्येक व्यक्ति का कर्त्तव्य है। इस कर्त्तव्य से विमुख होने वाले व्यक्ति को गुरु जाम्भोजी ने फटकार लगाते हुए कहा है कि मुहमद हलाली नहीं है, फिर तुम क्यों मुर्दा खाते हो–

'महमद साथ पयंबर सीधा, एक लख असी हजारूं
महमद मरद हलाली होता, तुम ही भये मुरदारूं' [14]

जीवों पर अत्याचार करने का हश्र मनुष्य को अवश्य ही भुगतना पड़ेगा। श्रीराम ने भी मृग का शिकार करने के उपक्रम की कीमत चुकाई थी। यही कारण है कि गुरु जाम्भोजी ने मनुष्य को सचेत करते हुए कहा– यदि जीवों पर अत्याचार करते हो तो भविष्य में इसके घातक परिणाम उपस्थित होगें, तुम्हारा यह जीवन मूल ही नष्ट हो जाएगा।

'जीवां ऊपर जोर करीजै, अंत काल होयसी भारूं' [15]

आज समस्त विश्व पर्यावरण प्रदूषण के विषय मे चिंतित है। भारतीय संसद द्वारा भी पर्यावरण संरक्षण के लिए अनेक अधिनियम पारित किए गए है–

- वन्य जीवन संरक्षण अधिनियम (1972)
- जल प्रदूषण नियंत्रण अधिनियम (1974)
- वायु प्रदूषण नियंत्रण अधिनियम (1981)
- पर्यावरण संरक्षण अधिनियम (1986)
- खतरनाक अपशिष्ट प्रबंधन एवं निष्पादन अधिनियम (1989)
- ध्वनि प्रदूषण नियमन एवं नियंत्रण अधिनियम (2000)
- भारतीय दंड संहिता (1860)
- इकोवार्म स्कीम

संसद ने पर्यावरण संरक्षण अधिनियम पारित करके सराहनीय प्रयत्न किए हैं। पर्यावरण एवं वन मंत्रालय ने भी पर्यावरण संरक्षण में अतुलनीय योगदान दिया है। वन एवं पर्यावरण मंत्रालय के इन ध्येयों में वनस्पतियों, वन रोपण, जीव–जन्तुओं और वन्य जीवों का संरक्षण, प्रदूषण नियंत्रण एवं निवारण, पर्यावरण की सुरक्षा सुनिश्चित करना शामिल है। वर्तमान युग में पर्यावरण बचाने के लिए जो शोध किए जा रहे है, उनका आदर्श प्रारूप गुरु जाम्भोजी ने बहुत पहले ही प्रस्तुत कर दिया था। गुरु जाम्भोजी के पर्यावरण विषयक चिन्तन की व्यापकता स्वयंसिद्ध है। उनके चिन्तन की प्रासंगिकता उत्तरोतर बनी रहेगी, जब तक मनुष्य अपने अंग रूपी वृक्षों को काटने से बाज नहीं आएगा।

संदर्भ सूची

1. डॉ० हीरालाल माहेश्वरी, श्री जाम्भोजी और जम्भवाणी मीमांसा, श्री गुरु जम्भेश्वर साहित्य सभा(रजिः), श्री बिश्नोई मंदिर अबोहर, संस्करण–2011, पृष्ठ–2।
2. कृष्णानंद आचार्य(टीकाकार), जम्भसागर, जाम्भाणी साहित्य अकादमी, बीकानेर, अष्टम् संस्करण–2013, पृष्ठ–286।
3. वही, पृष्ठ–35।
4. वही, पृष्ठ–167।
5. वही, पृष्ठ–76।
6. वही, पृष्ठ–247।
7. वही, पृष्ठ–132।
8. कृष्णानंद आचार्य(सं०), पोथो ग्रंथ ज्ञान, जाम्भाणी साहित्य अकादमी, बीकानेर, संस्करण–2013, पृष्ठ–29।

9. कृष्णानंद आचार्य(टीकाकार), जम्भसागर, जाम्भाणी साहित्य अकादमी, बीकानेर, अष्टम् संस्करण–2013, पृष्ठ–38।
10. वही, पृष्ठ–39।
11. वही, पृष्ठ–39।
12. वही, पृष्ठ–289।
13. वही, पृष्ठ–129।
14. वही, पृष्ठ–43,44।
15. वही, पृष्ठ–40।